पत्रिका

जैव ईंधन की विफलता पर उठे सवाल

Updated: 2016-08-01 05:01:11 IST

जवाहर बाल भवन में टॉय ट्रेन पुटनी एक्सप्रेस को जैव ईंधन से चलाने की योजना विफल हो गई है। अगस्त 2012 में काफी धूमधाम के साथ बाल भवन के अधिकारियों ने जैव ईंधन मिश्रित

बेंगलूरु. जवाहर बाल भवन में टॉय ट्रेन पुटनी एक्सप्रेस को जैव ईंधन से चलाने की योजना विफल हो गई है। अगस्त 2012 में काफी धूमधाम के साथ बाल भवन के अधिकारियों ने जैव ईंधन मिश्रित डीजल से पुटनी एक्सप्रेस चलाने की योजना शुरू की थी। दरअसल, पर्यावरण अनुकूल ईंधन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राज्य जैव ईंधन विकास बोर्ड और बालभवन ने संयुक्त रूप से ग्रीन टॉय ट्रेन को हरी झंडी दिखाई थी।

मगर अब कहा जा रहा है कि जैव ईंधन के कारण पुटनी एक्सप्रेस के इंजन की कार्य क्षमता में गिरावट आ गई है। योजना लागू होने के बाद बालभवन में 1968 में शुरू की गई टॉय ट्रेन 80 फीसदी डीजल में 20 फीसदी जैव ईंधन मिश्रित कर परिचालित होने लगी। इसके लिए जैव ईंधन का उत्पादन एक विशेष प्रकार के जंगली पेड़ किया जा रहा था। अगर यह परियोजना सफल होती तो इसे कर्नाटक राज्य सड़क परिवहन निगम (केएसआरटीसी) और बेंगलूरु महानगर परिवहन निगम (बीएमटीसी) के बसों का परिचालन भी जैव ईंधन मिश्रित ईंधन से होता।

मगर चार साल में ही चुपचाप प्रयोग का अंत हो गया। बाल भवन की अध्यक्ष भावना रमन्ना का कहना है कि जैव ईंधन के कारण तेल में काफी चिकनाई आ रही है और इससे बड़े पैमाने पर कालिख जमा हो रहा है। इसके कारण इंजन की शक्ति घट रही है और उसकी कार्य क्षमता में गिरावट आ रही है। इसके चलते ट्रेन की गति सामान्य से काफी कम हो रही है और डीजल की अपेक्षा इस तेल के इस्तेमाल से इंजन का पिक-अप धीमा हो रहा है। टॉय ट्रेन के लिए जैव ईंधन तैयार करने वाले कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यूएएस) में वानिकी एवं पर्यावरण विभाग के प्रोफेसर केटी प्रसन्ना ने कहा कि डीजल में मिश्रित किए जाने वाले ईंधन की गुणवत्ता डीजल से पूरी तरह मिलती है इसलिए बाल भवन को ट्रेन के परिचालन में किसी तरह की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह समस्या तभी उत्पन्न हो

सकती है जब जैव ईंधन बनाने की प्रक्रिया में कोई गलती हो।

मगर बाल भवन ने कभी भी परिचालन संबंधी समस्याओं के बारे में नहीं बताया। इसलिए उनका मानना है कि जैव ईंधन की अधिक लागत के कारण समस्या है न कि उसे डीजल में मिलाने के कारण। जैव ईंधन महंगा पड़ता है। डीजल की कीमतों में आई गिरावट के बावजूद जैव ईंधन की कीमतों में गिरावट नहीं आई क्योंकि श्रम लागत, रासायनों एवं उत्प्रेरकों की कीमत कम नहीं हुई। उन्होंने कहा कि बाल भवन हर 10–15 दिन पर 50 लीटर जैव ईंधन की मांग करता था और महीने में लगभग 150 लीटर की आवश्यकता होती थी। चूंकि वे जैव ईंधन का वाणिज्यिक उत्पादन नहीं करते इसलिए कीमतों में गिरावट नहीं आती।

भारतीय विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर टीवी रामचंद्र के मुताबिक यह भ्रष्टाचार से जुड़ा मुद्दा है जिसमें नौकरशाह शामिल हैं। अगर समस्या थी तो कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय को उससे अवगत कराया जाना चाहिए था और दूसरे आपूर्तिकर्ता से इसे हासिल किया जा सकता था। जैव ईंधन की सफलता से जुड़ी कई कहानियां हैं। केंद्र सरकार भी जैव ईंधन को बढ़ावा देने के लिए एक कार्यबल का गठन किया है। अगर यह प्रयोग विफल हुआ है तो यह प्रशासन की विफलता है।

अपने विवाह के सपने को सपने भारत मैट्रीमोनी से साकार करे।- निःशुल्क रजिस्ट्रेशन करे!

sponsored